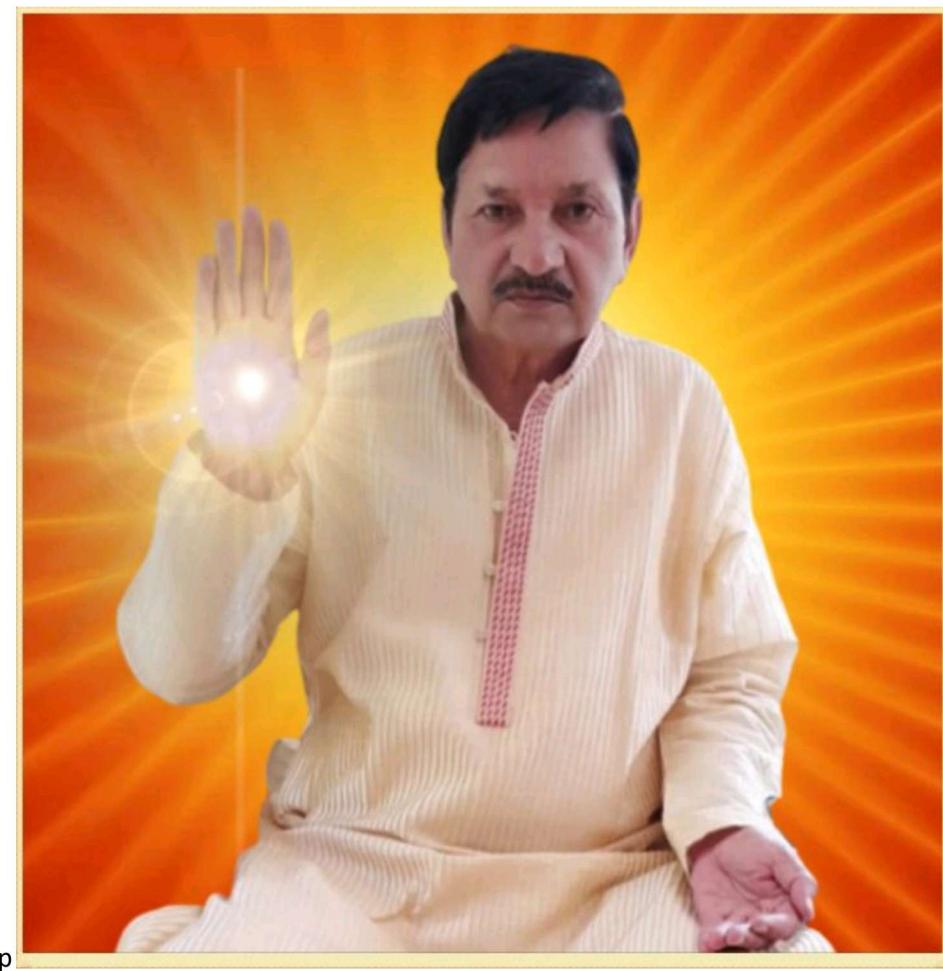


आत्मबोधमाला



परमसंत सदगुरु वक्त सुरेशादयाल

ब्रह्मज्ञान योग संस्थान मोचकला बिसवां सीतापुर उत्तर प्रदेश भारत

“ सुरेशादयाल वाणी ”

परमसंत सदगुरु वक्त सुरेशादयाल

ब्रह्म ज्ञान योग
संस्थान
बिसवाँ
सीतापुर



भूमिका

आत्म जानि परमात्म जाने, सन्त कहावै सोई।
यह भेद काया से न्यारा, जाने बिरला कोई॥

1. हमारा उद्देश्य आत्मा को जानना है क्योंकि यही धर्म है इसी से मोक्ष होता है।
2. हम भ्रम वस सारी ज़िन्दगी मन को ही आत्मा मान कर उसी की साधना में लगे रहते हैं।
3. हम पाँच नामो मे, दोनों आँखों के बीच दिखने वाले सात प्रकाशो को, कान बन्द करके सुनने वाले अनहदनादों में फसे रहते हैं। और आत्मा को खोज नहीं पाते हैं। ब्रह्मज्ञान को ही आत्मज्ञान मान लेते हैं।
4. आत्मा न शरीर के बाहर है, न शरीर के अन्दर है। वह न गुप्त है न प्रकट है। इसका भेद सद्गुरु से जान कर आत्मा को प्रकट कराया जाता है।

प्रस्तुत पुस्तक इसी क्रम में लिखी गयी है
पुस्तक का अध्यन करे तथा ऐसा सद्गुरु खोजें जो
तुमको आत्मा को लखा दे।

सुरेशादयाल

ब्रह्मज्ञान योग संस्थान

मोचकलाँ बिसवाँ सीतापुर उ. प्र.
सम्पर्क सूत्र -9984257903

विषय सूची

| क्रमसंख्या | क्रमसंख्या | पृष्ठसंख्या |
|------------|--|--------------|
| | प्रथम भाग – “जड़ और चेतन” | 06 |
| 01 | संसार का नियम ,जड़ और चेतन ,चेतन जीव भक्ति जड़ की करे या चेतन की | 07 |
| 02 | भक्त सद्गुरु से कहता है , दो अक्षर का भेद ,वस्तु एक नाम अनेक | 08 |
| 03 | मन माया का मत , मन द्वारा संचालित जीव,आत्मा द्वारा संचालित जीव , पहिचान माया | 09 |
| 04 | क्या छोड़ना है क्या पकड़ना है | 10 |
| 05 | हम मुक्त क्यों नहीं हो पाते हैं | 11 |
| 06 | प्रेम द्वैत है , हम अपना रूप कहाँ देखें | 12 |
| 07 | भक्त की पुकार प्रभू या आत्मा या राधास्वामी से | 13 |
| 08 | पहिचान गुरु और सद्गुरु की ,सद्गुरु | 14 |
| 09 | पहिचान राधास्वामी | 15,16 |
| 10 | राधास्वामी मत का नामदान | 17 |
| 11 | राधास्वामी मत के नामदान की विशेषताएं | 18 |
| 12 | चौथे पद की विशेषताएं ,चेतावनी | 19 |
| 13 | वैराग्य क्या है , क्या अंड पिण्ड ब्रह्माण्ड की रचना नकली है ,चौथा पद | 20 |
| | द्वितीय भाग- “आत्मा की भक्ति” | 21 |
| 14 | आत्मा की भक्ति- प्रथम चरण में, दुसरे चरण में तीसरे चरण में | 22,23 |
| 15 | आत्मा की भक्ति की आवश्यकता | 24,25 |
| 16 | आत्म की भक्ति में, आत्मा की भक्ति से हमारे में क्या परिवर्तन होता है | 26 |
| | तृतीय भाग- “अनन्त की साधना” | 27 |

विषय सूची

| क्रमसंख्या | विषय | पृष्ठसंख्या |
|------------|--|-------------|
| 17 | अनन्त की साधना, सूरत में कैसे ठहरें ,और संसार से कैसे अलग हो ,की प्रकट करे ,सहज कैसे हो सत्य ,मिथ्या और असत्य में अंतर | 28 |
| 18 | सत्य ,मिथ्या ,असत्य | 29 |
| 19 | आत्मज्ञान, ब्रह्मज्ञान और तत्त्वज्ञान में अंतर –आत्मज्ञान | 30,31 |
| 20 | ब्रह्मज्ञान | 32,33 |
| 21 | तत्त्वज्ञान, इसमे अष्टांग योग, चार उपादानों का अध्यन ,उपरम, तितिक्षा, श्रद्धा विश्वास | 34 |
| 22 | समाधान ,मुमुक्षत्व ,तत्त्वविवेक ,आत्मा क्या है | 35 ,36 |
| 23 | आत्मज्ञान और तत्त्व ज्ञान में भेद | 37 |
| | चतुर्थ भाग- “आत्मबोध माला आत्मा परमात्मा की खोज” | 38 |
| 24 | आत्मबोध माला-हमारा इष्ट परमात्मा कैसा है ,अगोचर वस्तु ही क्यों खोजे, क्या अंड, पिण्ड ब्रह्माण्ड इन तीनों लोकों की रचना नकली है ,तीन लोक और मन माया से पार कैसे निकले | 39 |
| 25 | सारशब्द में समाने के बाद क्या करें , | 40 |
| 26 | कपाट कैसे खुलें भवसागर कैसे पार हों मन और माया कैसे छूटे ,आत्मज्ञान कैसे प्राप्त हो, मुक्त तो जीव अवस्था से होना है, पीव अवस्था क्या है | 41 |
| 27 | सत्संग- सारशब्द | 42 |
| 28 | अध्यात्म का मूल मंत्र | 43 |
| 29 | सार शब्द प्रकट कैसे हो | 44 |
| 30 | सार शब्द | 45 |
| 31 | माया | 46 |
| 32 | परमात्मा की खोज | 47 |
| 33 | बैराग्य क्या है | 48 |

प्रथम भाग

जड़ और चेतन

संसार का नियम:-

सारा संसार - देवताओं के अधीन है।

सारे देवता - मन्त्रों के अधीन है।

सारे मंत्र - मन के अधीन है।

सारे मन - आत्मा के अधीन है।

जड़ और चेतन :-

केवल जीव" और "आत्मा" ही चेतन है।

शेष सभी जड़ हैं।

अतः हमारा मन भी जड़ है।

चेतन जीव , भक्ति जड़ की करें, या चेतन की:-

(1) चेतन जीव के लिए, केवल चेतन आत्मा की ही भक्ति करने योग्य है। मोक्ष केवल और केवल इसी से ही होता है।

(2) जो जिस तत्व की भक्ति करता है, उसका अगला जन्म उसी से संबंधित होता है।

भक्त सद्गुरु से कहता है :

- (1) तनदुरुस्ती, मनदुरुस्ती, धनदुरुस्ती हो ।
- (ii) धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष भी हो ।

सद्गुरु क्या करता है:-

सद्गुरु वही कहावे , दो अक्षर का भेद बतावै ।
एक छुड़ावै एक लखावै, तब प्राणी निज घर को जावै ॥

दो अक्षर का भेद:-

- (1) मन और माया को छोड़ना है।
- (ii) आत्मा को लखना है

वस्तु एक नाम अनेक :-

इसी आत्मा की महिमा अनेक नामों से गायी गयी है इसी आत्मा को, राम, नाम, प्रभू, परमात्मा, परमपद, हरिपद, चौथापद, चौथालोक, सतगुरु, गुरु, गोविन्द, निःअक्षर, विदेही, आत्मघट, मोक्षपद, किलिया, धुरी, आधार, अलख, अकह, अनामी, निर्वाण परमधार हंस, सत्यपद, अद्वैत, राधास्वामी इत्यादि नामों से बताया गया है।

मन और माया का मत :-

सभी मते संसार के, सभी काल के जान ।
सत्य, सनातन, आत्मा, यह दयाल पहिचान ॥

मन के मते न चालिए, मन के मते अनेक ।
जो मन पर असवार है, सो साधो कोई एक ॥

भेद, मन द्वारा संचालित और आत्मा द्वारा संचालित मेः-

मन चेती नहि होत है, प्रभु चेती तत्काल ।

पहिचान माया :-

- (i) गो, गोचर जंह लगि मन जाई, सो सब माया जानेव भाई।
- (ii) जितने भाव हैं, सब माया हैं।

- (iii) अण्ड, पिंड, ब्रह्माण्ड ,तीन लोक माया के हैं।
- (iv) जो हम आँखो से देखते हैं,कानों से सुनते हैं ,जिसका अनुभव हम इन्द्रियों से करते हैं, वह सब माया है।
- (v) केवल आत्मा ही सत्य है, उसे छोड़कर शेष सब माया है।

क्या छोड़ना है, क्या पकड़ना है :-

- (i) केवल आत्मा ही सत्य है, इसको जानने के लिए, चौथे पद या चौथे लोक को ही जानना है। यह दयाल मत है। यह आत्मपद है, यही राधास्वामी है।
- (ii) केवल "आत्मा" को छोड़कर, शेष जितना भी जानना है सब माया और मन का ही मत है।
- (iii) केवल आत्मा की ही भक्ति करनी है , यह अद्वैत की भक्ति है। शेष सभी भक्ति, मन और माया की हैं। इन्हें छोड़नी है।

(iv) मन और माया की साधनाए छोड़नी है।

(v) केवल आत्मा की ही भक्ति करनी है।

(vi) मन, माया, और द्वैत को छोड़ना है।

(vii) केवल आत्मपद, अद्वैत, को ही जानना है।

हम मुक्त क्यों नहीं हो पाते, क्यों फंसे पड़े रहते है :-

(1) प्रकृति और पुरुष में भेद नहीं कर पाते हैं।

(ii) जड़ और चेतन में भेद नहीं कर पाते हैं।

(iii) द्वैत और अद्वैत में भेद नहीं कर पाते हैं।

(iv) मन, माया और आत्मा में भेद नहीं कर पाते हैं।

(v) तीन लोक जिन्हें छोड़ना है और चौथे लोक में भेद नहीं कर पाते हैं।

(vi) सत्य और मिथ्या में भेद नहीं कर पाते हैं।

(viii) प्रकृति ही ब्रह्म है, अतः हम ब्रह्मज्ञान और आत्मज्ञान में भेद नहीं कर पाते हैं।

(ix) प्रकृति तत्व है, हम तत्व और अतत्व में भेद नहीं कर पाते हैं।

(x) हम ज्ञान और बोध में भेद नहीं कर पाते हैं।

(xi) हम निराकार और अपरोक्ष में भेद नहीं कर पाते हैं।

(xii) चीटी की चाल, मकड़ी की चाल, बन्दर की चाल और विहंगम चाल में भेद नहीं कर पाते हैं।

प्रेम द्वैत है :-

जहाँ दो हैं वहीं प्रेम होता है, यह द्वैत है, यह प्रेम का भाव है। यह ब्रह्मज्ञान के अन्तर्गत आता है। क्योंकि आत्मज्ञान में अद्वैत है। वहाँ कोई भाव है ही नहीं, वहाँ कोई दूसरा है ही नहीं।

हम अपना रूप कहा देखें:-

(1) हम अपना रूप पंच भूतों और माया में न देखकर केवल आत्मा में देखें।

(ii) हम अपना रूप अनित्यपदार्थ तत्व और माया में न देखकर नित्य पदार्थ आत्मा में ही देखें।

भक्त की पुकार प्रभू या आत्मा या राधास्वामी से:-

(1)

तन निरोगी रहे, धन भी भरपूर हो ।
मन प्रभू में रहे, ऐसा दस्तूर हो ।
भ्रांति मन से मिटे, मन समर्पित भी हो ।
मन से मुक्ति मिले, जीव को, मोक्ष हो ।

(2)

सत्यपद भी मिले, काग से हंस हो ।
चौथा पद भी मिले, वह परमपद भी हो ।
द्वार दसवां खुले, और प्रकट धार हो ।
राधा स्वामी मिले, पद भी निर्वाण हो ।

(3)

नाम ऐसा मिले, वह निः अक्षर भी हो ।
लोक चौथा मिले, वह अचल पद भी हो ।
वही किलिया, धुरी, सब का आधार हो ।
सतगुरु जो मिले, वह परमधार हो ।

(4)

राम जिसको कहें, वह विदेहीं भी हो ।
जो अवस्था मिले, जीव से पीव हो ।
आत्मघट भी मिले, बोध आत्म का हो ।
सर्व व्यापक वही, सर्व न्यारा भी हो ।

पहिचान, गुरु और सदगुरु की:-

(1) गुरु :-

अनहद नाद का योग है, यह है द्वैत का ज्ञान ।
यह मन की ही साधना, 'गुरु' का है यह ज्ञान ॥

अजपा, जाप, नूर सब मनके,
इन सब को तू माया जान।
अन्दर, बाहर, ध्यान धरावै,
इन सब को तू गुरु ही जान ॥

(2) सदगुरु :-

चौथा पद, अद्वैतपद, पूर्ण वही पद जान ।
सत्य यही पद, मोक्षपद, यही है पद निर्वाण ॥
आत्मपद भी यही है, अलख पही पद जान।
इसको जो लखवाय दे, वही सदगुरु सुजान ॥

"पहिचान- राधास्वामी"

अरे तू कर उसकी पहिचान ।

सब का मालिक एक वही है, उसी एक को पहले जान ।
वही राम है, वही नाम है, वहीं है सत गुरु और सतनाम ।
वही विदेही, वही आत्मपद, वही है पूर्ण पद, निर्वाण ।
वहीं गुरु है, वहीं मोक्ष पद, वही अचलपद उसको जान ।
राधास्वामी उसी को कहते, केवल उसको ही तू जान ।
बन्दी छोर निः अक्षर है वह, वही परमपद उसको जान ।

(2)

चक्र, द्वार नौ, प्रकृति को छोड़ो, लोक, ब्रह्माण्ड सब मिथ्या जान ।
पाँच तत्व के परे मुक्त पद, किलिया, घुरी वही है जान ।
अनहद नाद, नूर को छोड़ो, इन सब को तू माया जान ।
जाप, अजाप, ध्यान सब मन के, मन ही काल है, छोड़ो, जान ।
अण्ड, पिंड, ब्रह्माण्ड को छोड़ो, तीन लोक है माया आन ।
तीन लोक क्यों भटक रहा है, भ्रम वस होकर तू नादान ।
तीन लोक तो माया के है, इनका मालिक काल को जान ।
चौथे लोक को खोजो पहले, दसवाँ द्वार वही है जान ।

(3)

नौ द्वारे संसार के समझो , दसवाँ द्वार से उसको जान।
द्वैत छोड़ि अद्वैत को पकड़ो, द्वैत लोक है माया जान।
तनघट छोडो, मनघट छोडो, केवल आत्मघट पहिचान।
न यह अन्दर, न यह बाहर, सदगुरु खोजो, लो पहिचान।
न यह गुप्त, नहीं यह प्रकट, भागीरथी धार है जान।
व्यापक सर्व, सर्व से न्यारा, सबसे अलग वही है जान।
सुरत, निरत, मन है वहाँ नाहीं, एक अकेला वही है जान।
जीव अवस्था में क्यों भटके, पीव अवस्था को तू जान।
यही अवस्था सबसे ऊपर, सतगुरु पद है, इसको जान।
इसे जानि कुछ शेष न रहता, सबको छोड़ इसी को जान।

(4)

हो अनन्य तुम खोजो उसको सहज समर्पण से पहिचान।
अभी विमुख हो, हो जावो सन्मुख, भेद गुरु से उसका जान।
है सन्मुख पर दीखत नाहीं, गुरु से मिलकर लो पहचान।
उसको जानि वहीं ही जावो, तुम हो वहीं, स्वयं को जानि।
राधास्वामी स्वयं तुम्हीं हो, खुद से खुद को लो पहिचान।
धार शब्द की प्रकट हो रही, आत्म घट मे उसको जान।
राधास्वामी यहीं धार है, यहीं नाम है इसको जान।
पूर्ण सहज हो, सुरत हो स्थिर, सन्मुख होकर लो पहचान।

राधास्वामी मत का नामदान :-

नाम केवल चौथे लोक में ही है, तीन लोक में नाम है ही नहीं, तो नाम का दान कैसा ।

- (I) नाम रहे चौथे पद माही, तुम दूढ़ौ त्रिलोकी माही।
- (II) तीन छोड़ि चौथा पद दीन्हा, सत्यनाम सतगुरु गति चीन्हा
- (III) कलि केवल एक नाम अधारा, वेद, पुराण, सन्तमत सारा ।
- (IV) कोटि नाम संसार के, ताते मुक्ति न होय ।

आदि नाम जेहि गुप्त जप, बूझै बिरला कोय ॥

- (V) राधास्वामी, अण्ड, पिंड, ब्रह्माण्ड के पार चौथा पद है उसी को सद्गुरु प्रकट कराता है। जीव को बोध कराता है।

राधास्वामी मत के नामदान की विशेषताएँ :-

- (1) सदगुरु, जीव को नामदान देते हैं उसी समय जीव को राधास्वामी धाम में पहुंचा दिया जाता है। जीव, आत्मा से मिलकर एक हो जाता है।
- (2) नामदान प्राप्त होने के बाद से कोई भी साधना, पूजा, ध्यान, अनहद नाद योग, अजपा जाप इत्यादि कोई भी नहीं किया जाता है, क्योंकि यह साधनाएं मन की ही हैं, तीन लोक की ही हैं। तीन लोक माया के हैं। अतः इन्हें छोड़ दिया जाता है। तीन लोक काल के हैं। मन ही काल है। यह सभी साधनाएं तत्वों की हैं।
- (3) राधा स्वामी मत में अद्वैत की साधना है वहां दो नहीं हैं, आत्मा से आत्मा की भक्ति है। अनहद नाद योग में दो हो गये अतः द्वैत है इसलिए इसे छोड़ा जाता है।
- (4) कोई कंठी, माला, कपड़े, दाढ़ी, जटा इत्यादि कुछ भी दिखावा वाला काम नहीं होता है।
- (5) राधास्वामी मत में किसी की भी जय नहीं बोली जाती है, क्यों कि जय द्वैत है, यदि किसी की जय हुई तो उसके विपरीत किसी की क्षय स्वतः होगी।

जैसे:-

यदि राम की जय तो रावण की क्षय इत्यादि।

चौथे पद की मुख्य विशेषतायें:-

- (i) जो भी इसके सामने आता है, इसी के जैसा होने लगता है।
- (ii) केवल यही सत्य है, शेष सब मिथ्या है।
- (iii) सभी का आधार यही है।
- (IV) चौथा पद केवल मनुष्यों में ही प्रकट हो सकता है।
- (v) जब तक प्रकट नहीं होता है, तब तक हर जगह होते हुए भी कोई परिवर्तन नहीं कर सकता है। जब कि स्वर्ग और नर्क में हर जगह समान रूप से व्याप्त है।
- (Vi) प्रकट होते ही पूर्ण परिवर्तन स्वतः होने लगता है।
- (vii) अपने समान बना लेता है।
- (viii) आप उसी "परमपद" में "हरिपद" में पहुँच जाते हैं।

चेतावनी :-

बिना बोध के भाखै ज्ञान, बोध होकर धरै ध्यान।
ज्ञानी होकर सुमिरै जग, कहै दयाल यह तीनो ठग॥

वैराग्य क्या हैः

अन्तः जगत् और बाह्य जगत्, दोनों से द्रष्टि को मोड़।
केवल आत्म बोध से, खुद से खुद को जोड़ ॥

क्या पिंड, अँड़ , ब्रह्माण्ड की रचना नकली हैः-

आदि माया कीन्हीं चतुराई, झूठी बाजी पिंड दिखायी।
अविगत रचना रची अंड माही, ताका प्रतिबिम्ब डारा है ॥

शब्द विहंगम चाल हमारी,
कहे कबीर स तगुरु दई तारी।
खुले कपाट शब्द झनकारी,
पिंड, अँड के पार सो देश हमारा है ।

चौथा पदः-

यही सभी के परे है, मूलयही है ज्ञान ।
सार सभी का यही है, यही है पद निर्वाण ॥
राधास्वामी यही है, यही अवस्था पीव ।
भवसागर के पार है, सभी मुक्त हो जीव ॥
निजस्वरूप, निजनाम है, मुक्त तत्व है जान ।
राम, नाम, भी यही है, यही है आत्मज्ञान ॥
केवल यही तो सत्य है, बाकी सभी असार ।
यही अचलपद, रामपद, सभी पदों का सार ॥

द्वितीय भाग

आत्मा की भक्ति

सभी शास्त्रों में जिस एक चीज को मानव कल्याण के लिए सबसे जरूरी बताया गया है वह एकमात्र "आत्मा" की "भक्ति" ही है।

यह भक्ति तीन चरणों में होती है:-

प्रथम चरण मेः- आत्मा को प्रकट कराना पड़ता है यह सद्गुरु कराता है।

सब घट मेरो साइयां , खाली घट न कोय।

बलिहारी वा घट की , जा घट प्रकट होय॥

दूसरे चरण मेः- आत्मा के सम्मुख होना पड़ता है।

सम्मुख होने पर:-

1. मन निर्मल हो जाता है।
2. मन आत्मा को समर्पित हो जाता है।
3. मन आत्मा द्वारा संचालित हो जाता है।
4. जीव को मन से मुक्ति मिल जाती है।
5. जीव मन से मुक्त होते ही आत्मा से मिलकर जीवअवस्था से पीव अवस्था में आ जाता है।
6. मन ही भवसागर है भवसागर पार हो जाता है।
7. चौरासी पार होकर जीव तर जाता है।
8. मन तुम्हारा मित्र बन जाता है मन के संचालक तुम बन जाते हो।
9. मन अज्ञानी से ज्ञानी विवेकी , हंस , परमहंस बन जाता है।

10. जीव माया के तीन लोकों को पार करके चौथे लोक या चौथे पद या पिंड ,अंड ,ब्रह्मांड के पार पहुंच जाता है।
11. चित्त की व्रतियों का निरोध हो जाता है।
12. पूर्ण अवस्था,परमपद अवस्था,हरिपद अवस्था,मोक्ष अवस्था प्राप्त हो जाती है।
13. विवेक वाली दृष्टि प्राप्त हो जाती है।
14. तदात्म से एकात्म अवस्था प्राप्त हो जाती है।
15. स्थिर प्रज्ञ अवस्था प्राप्त हो जाती है।
16. सत्य प्रकट होने पर , जैसे सूर्य के प्रकट होने पर अंधेरा नष्ट हो जाता है वैसे ही असत्य स्वयं ही नष्ट हो जाता है।

तीसरे चरण में:- (I) हम परम सूक्ष्मतम् एनर्जी से जुड़ जाते हैं और वैसे ही हो जाते हैं।

जानति तुमहि, तुमहि होइ जाई।

- (II) तीनों लोक की जो भी वस्तु चाहते हो उसका स्थूल रूप इस एनर्जी में कर दो वह वस्तु तुम्हें प्राप्त हो जाएगी।
- (III) तीनों लोक का संचालन इसी एनर्जी से होता है।

आत्मा की भक्ति की आवश्यकता:-

1. केवल यही भक्ति अध्यात्मिक है शेष सभी धार्मिक हैं।
2. हम परम सूक्ष्मतम एनर्जी से जुड़ जाते हैं तथा उसी के द्वारा संचालित होने लगते हैं।
3. मन, माया, आशा, तृष्णा समाप्त हो जाते हैं।
4. तीन लोक माया के हैं इन से पार हो जाते हैं।
5. मन काग रूप से हंस रूप हो जाता है।
6. इंद्रियां विवेकी तथा दृष्टि विवेक वाली प्राप्त हो जाती है।
7. हम जीव अवस्था से पीव अवस्था में आ जाते हैं।
8. भवसागर यह मन ही है हम भवसागर तथा चौरासी से पार हो जाते हैं।
9. परमानंद, परमशांति, परमपद, पूर्णपद, गुरुपद, गोविंद पद सब हमें प्राप्त हो जाते हैं।

10. प्रकृति के नियमों से तथा प्रकृति से, ब्रह्मांडों से पार हो जाते हैं।
11. तीन तापों का असर नहीं होता है।
12. कैवल्य मुक्ति प्राप्त हो जाती है।
13. सभी शरीरों से पार हो जाते हैं।
14. निज स्वरूप में स्थित हो जाते हैं।
15. स्वभाव में परिवर्तन हो जाता है।
16. सत्य प्रकट हो जाता है असत्य नष्ट हो जाता है।
17. हमें विचारातीत और भावातीत नहीं होना पड़ता है स्वतः ही हमें विचारातीत और भावातीत अवस्था प्राप्त हो जाती है।
18. अज्ञानी से ज्ञानी अवस्था प्राप्त हो जाती है।
19. हम परमात्मा से एक हो जाते हैं।
20. मनुष्य के सभी उद्देश्यों की पूर्ति होने लगती है।

आत्मा की भक्ति में:- (I) इंद्रियों का, मन का, सुरत का किसी भी शरीर जैसे - स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर, कारण शरीर, महाकारण शरीर इत्यादि का प्रयोग नहीं किया जाता है।

(II) ध्यान, अनहदनाद, क्रिया, कर्म इत्यादि का प्रयोग नहीं किया जाता है।

(III) कोई भी जाप, अजपा इत्यादि का प्रयोग नहीं किया जाता है।

आत्मा की भक्ति से हमारे में क्या परिवर्तन होता है:-

- हम जीव अवस्था से पीव अवस्था में आ जाते हैं।
- हम तन घट से आत्म घट में आ जाते हैं।
- जो हम मन द्वारा संचालित थे, वह मन से मुक्त होकर आत्मा द्वारा संचालित हो जाते हैं।
- जीव, मन से मुक्त हो जाता है इसी को मुक्ती कहते हैं।
- मन ही काल है हम काल के देश से आत्मा के दयाल देश में पहुंच जाते हैं।
- मन ही भवसागर है, हम भवसागर से पार हो जाते हैं।

तृतीय भाग

अनन्त की साधना

अनन्त की साधना:-

आत्म स्थित प्राप्त कर , तत्वों से हो पार ।
यही अनन्त की साधना, यही सभी का सार ॥

सुरत कैसे ठहरे, और संसार से कैसे अलग होः-

सुरत हटे संसार से, मन से नाता तोड़।
दृष्टि, आत्म मे रहे, सुरत भी इससे जोड़ ॥

कैसे प्रकट करेः-

उत्तमा सहजावस्था , मध्यमा ध्यान धारणा ।

सहज कैसे होः-

पूर्ण प्रयासरहित होकर तुम , पूर्ण अनन्य हो जावो।
मन हो शून्य सुरत हो स्थिर , पूर्ण सहजता पावो ॥

सत्य , मिथ्या और असत्य में अन्तर :-

• सत्यः-

आदि, अनादि, अखण्ड हो, परिवर्तन से मुक्त ।
तत्वों से भी पार हो, परमधार से युक्त ॥
सत्य है, केवल आत्मा, दूजा नहीं है कोय ।
यही विदेही, परमपद, यही मुक्तपद होय ॥

• मिथ्या :-

उपयोगी है जगत में, सत्य नहीं है जान ।
निसिद्धिन सेवन सब करें, मिथ्या उसी को जान ॥

तत्वों की हर वस्तु को, उपयोगी जो होय ।
जैसी है वैसी दिखे, मिथ्या कहिए कोय ॥

• असत्यः-

वस्तु और दिखे और, भ्रम वस ऐसा ज्ञान ।
सत्य नहीं मिथ्या नहीं, वह असत्य है जान ॥
है रस्सी साँप दिखे, यह असत्य का ज्ञान ।
भ्रम वस, जो जो भासता, वह असत्य है जान ॥

आत्मज्ञान, ब्रह्मज्ञान, और तत्त्वज्ञान में अंतरः-

[1] आत्मज्ञान:-

- (i) यह आत्मा का ज्ञान है, इसे ज्ञान नहीं बोध कहा जाता है। क्योंकि ज्ञान मन से संबंधित है, जबकि बोध आत्मा से।
- (ii) यह चौथा लोक, चौथा पद है। यह अद्वैत है, यहाँ पर कोई दूसरा नहीं है। यह आत्मा से आत्मा की भक्ति है।
- (iii) यह चौथा पद, न शरीर के अन्दर है, और न शरीर के बाहर है। और न यह गुप्त है और न प्रकट है।
- (iv) यह सभी तत्त्वों से पार है, कोई तत्त्व नहीं है, परमतत्त्व का है।
- (v) इस आत्मपद में, कोई खण्ड नहीं है, कोई सोपान नहीं है, कोई मंडल नहीं है, सभी ब्रह्माण्डों और सभी प्रकृतियों के पार है।

- (vi) चौथे लोक मे पहुँचने पर नीचे के सभी तीन लोक ,स्वतः ही पार हो जाते हैं।
- (Vii) इसी को परमपद, हरिपद, भागीरथी, सहस्राधार इत्यादि इसी को कहते हैं।
- (viii) यह पद प्रकट नहीं है, इसको प्रकट कराना पड़ता है। इसे सद्गुरु प्रकट कराता है। हरि कृपा से यह प्रकट होता है।
- (ix) यह मोक्षपद है, भवसागर के पार है, चौरासी के पार है।
- (x) चौथे पद में पहुँचने के बाद कोई भी साधना, ध्यान इयादि नहीं किया जाता है।
- (xi) इस पद मे पहुँचने पर ही ज्ञानी, संत, परमसन्त, हंस, सद्गुरु इत्यादि होते हैं।

2 ब्रह्मज्ञान :-

- (I) यह मन का ही ज्ञान है, मन ही निराकार है अतः यह निराकार का ज्ञान है। यह शरीर के अन्दर का ज्ञान है। सूक्ष्म लोकों का ज्ञान, कारण लोकों का ज्ञान तथा महाकारण लोकों का ज्ञान है।
- (ii) सूक्ष्मलोक में मन सूक्ष्म होता है, कारण लोकों में मन कारण होता है, महाकारण लोकों में मन महाकारण होता है। जैसे जैसे सूक्ष्म लोकों में जायेंगे मन भी उसी के अनुरूप होता चला जायेगा।
- (iii) यह प्रकाश और अनहदनाद का ज्ञान है। ब्रह्मज्ञान की साधना प्रकाश और अनहदनाद के सोपानों का भेद जानकर जहाँ की धुनि या नाद हो वहीं का प्रकाश होना चाहिए। इसमें प्रकाश और अनहदनाद को सम करके उस मंडल को पार किया जाता है।
- (iv) तीन लोक, सभी ब्रह्माण्ड, सभी प्रकृतियों सभी ब्रह्म ज्ञान में ही आती है। तीन लोक का मालिक मन है।

(v) मन ही काल है, यह काल और माया के लोक हैं।

(vi) मन ही को भवसागर कहा गया है। मन की सीमा या तीन लोक की सीमा पार कर लेने से या चौथे लोक में पहुँचने पर भवसागर समाप्त होता है, मन और माया समाप्त हो जाते हैं। आशा- तृष्णा समाप्त हो जाती है।

(vii) सात प्रकाश ही सात स्वर्ग बताये गये हैं। इसके आगे अपवर्ग आता है। यह भी तीन लोक में ही है।

(viii) सभी मन्त्र, मन से ही निकले हैं। इसी लिए हर मन्त्र में ऊँ लगाया जाता है। ऊँ मन के नीचे का भाग है। और सोहं मन के ऊपर का भाग है। इसके आगे भी मन के रूप मंडलों के अनुसार बदलते रहते हैं।

(ix) मन जहाँ भी जाता है। उसी का रूप हो जाता है। इसके रूप बदलते रहते हैं

(x) यह तत्वों का ज्ञान, अँड, पिंड, ब्रह्माण्ड का ज्ञान है।

(xi) ज्ञान गंगा या ज्ञान यज्ञ भी मन से ही संबंधित है।

तत्त्व ज्ञान :-

(i) इसमें अष्टांग योग जैसे:- यम् नियम, इंद्रियनिग्रह, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि का अध्यन किया जाता है।

(ii) चार उपादानों का अध्यन जैसे:-

सम :- मन को रोकना

दम :- इंद्रियों को रोकना

उपरमः- शब्द आदि से विचार हटाकर, आत्म चिंतन में लगाना ।

तितीक्षा :- शीत-उष्ण, सुख-दुःख, मान-अपमान को धैर्य से सहन कर लेना।

(iii) श्रद्धा विश्वास :-

(i) गुरु के वचनों और वेदान्त मे श्रद्धा और विश्वास रखना।

(iv) समाधान:- चित्त की एकाग्रता , अधिकारी और गुरु को बताकर हर समस्या का समाधान करना।

(v) मुमुक्षत्व :- मोक्ष की इच्छा रखना ।

(vi) तत्त्वविवेक:-

केवल आत्मा सत्य है, शेष सब मिथ्या है।

(vii) आत्मा क्या है:-

(i) सभी शरीर स्थूल, सूक्ष्म, कारण, महाकारण इत्यादि से भिन्न विदेही ।

(ii) पाँच कोशों से भिन्न।

(iii) सभी तत्वों से भिन्न अतत्व ।

(iv) पाँच महाभूतों से भिन्न अवस्था।

- (Viii) तत्वज्ञान का उद्देश्य आत्मा को जानना है। परन्तु तत्वों के ज्ञान से हम केवल तत्वों का अध्यन कर सकते हैं और आत्मा सभी तत्वों के परे है।
- (ix) तत्व ज्ञान के केवल ज्योति स्वरूप को ही आत्मा कह दिया गया है, जो ब्रह्म की श्रेणी में आता है आत्मा की श्रेणी में नहीं।
- (x) अतः हम तत्व ज्ञान में तत्वों का अध्यन करते हैं।
- (xi) ब्रह्म ज्ञान में अनहदनाद और प्रकाश का अध्यन करते हैं।
- (xii) आत्मज्ञान से ही आत्मा को जाना जाता है। इसे हम ज्ञान न कहकर बोध कहते हैं।

चौबीस तत्व है प्रकृति के, एक पुरुष है जान।
इसी पचीस को जानना, तत्व ज्ञान है मान॥

अनहंदनाद ही पुरुष है, प्रकृति प्रकाश को मान।
निरीश्वर बादी द्वैत है, दर्शन साँख्य से जान॥

ईश्वर जैसी सत्ता है, ईश्वर नहीं है मान।
इसे निरीश्वर जान लो, तत्व आकाश है जान॥

नाम,रूप दुई अकथ कहानी ।
समुझत बनत न जात बखानी॥
आत्म ज्ञान और तत्व ज्ञान में भेद
नाम अनाम में भेद है, रूप अरूप में भेद।
तत्व, अतत्व में भेद है, द्वैत, अद्वैत में भेद॥

इसी भेद को जानना, मुख्य यही है ज्ञान।
केवल आत्मज्ञान से, आत्मपद पहचान॥

चतुर्थ भाग

आत्मबोध माला

आत्मा परमात्मा की खोज

"आत्म बोध "माला"

हमारा इष्ट परमात्मा कैसा है:-

वस्तु अगोचर खोजिए , पिंड अंड के पार।
"सारशब्द" वहां होत है , सो है इष्ट हमारा॥

अगोचर वस्तु ही क्यों खोजें:- क्योंकि :-

गो, गोचर जहां तक मन जाई सो सब माया जानेब भाई॥

**क्या पिंड, अंड, ब्रह्मांड इन तीनों लोकों की रचना
नकली है:- हाँ**

आदिमाया किन्हीं चतुराई , झूठी बाजी पिंड दिखायी।
अविगत रचना रची अंड माही , ता का प्रतिबिंब डारा है॥
तीन लोक और मन माया से पार कैसे निकले:-

शब्द विहंगम चाल हमारी ,
कहे कबीर सतगुरु दई तारी।
खुले कपाट शब्द झनकारी ,
पिंड अंड के पार सो देश हमारा है॥

"सारशब्द" में समाने के बाद क्या करें:-

सुरति इसी में राखि कर , करो सभी तुम काम।

सत्य यही है , अलख है , यही राम यही नाम॥

**सभी के परे सभी का मूल सभी का सार तथा निर्वाण
पद भी यही है:-**

यही सभी के परे है , मूल यही है ज्ञान।

सार सभी का यही है , यही है पद निर्वाण॥

**राधा स्वामी , पीव अवस्था , भव सागर के पार की
अवस्था भी यही है:-**

राधास्वामी यही है , यही अवस्था पीव।

भवसागर के पार है , सभी मुक्त हो जीव॥

**निज स्वरूप , निज नाम , मुक्त तत्व , राम और
नाम भी यही है:-**

निजस्वरूप , निजनाम है , मुक्त तत्व है ज्ञान।

राम नाम भी यही है , यही है आत्म ज्ञान॥

**सत्य पद , अचल पद , राम पद , सभी पदों का सार भी
यही है:-**

केवल यही तो सत्य है , बाकी सभी असार ।

यही अचलपद, रामपद , सभी पदों का सार॥

कपाट कैसे खुलें , सार शब्द प्रकट कैसे होः-

पूर्ण प्रयास रहित होकर तुम , पूर्ण सहज हो जावो।

मन हो शून्य , सुरत हो स्थिर , सार शब्द को पावो॥

कैसे पहचाने सार शब्द को असली है या माया :-

शब्द , अखंड , अपार , एक रस , आत्म घट में होई।

"सारशब्द" अनहद से न्यारा , परखै बिरला कोई॥

कपाट कैसे खुलें "भवसागर" कैसे पार हो, "मन और माया" कैसे छूटेः-

आत्म ज्ञान है सार , बूझौ संत विवेक करि।
तुरत होव भव पार , मन माया को छोड़कर॥

आत्म ज्ञान कैसे प्राप्त होः-

तीन छोड़ चौथा पद पावो , सार शब्द के सम्मुख आवो।
दसवां द्वार यही है भाई , सहस्राधार चक्र जब पाई ॥
आत्म घट यही है जानो , भागीरथी शिव की पहिचानो।
"पीव अवस्था" पावो जबही , जीव मुक्त है जावे तबही॥
मुक्त तो जीव अवस्था से होना हैः-

"जीव अवस्था" से मुक्त है , पीव अवस्था पाव।
धार 'सुरति' की उलटि कर , आत्म घट में जाव॥

पीव अवस्था क्या हैः-

सुरति उलटि शब्दै लखौ , आत्म घट में जाय।
"पीव अवस्था" यही है , तुरत एक है जाय॥
धार सुरति की पलटि कर , आत्म घट में जाव॥
सार शब्द जो हो रहा , उसमें तुरत समाव ॥

सत्संग—सारशब्द

यदि पूरे अध्यात्म को एक शब्द में कहना हो तो:- वह शब्द है "एकात्म" होना।

- **एकात्म होने पर:-**

- 1 (i) इंद्रियों विवेकी
- (ii) मन निर्मल
- (iii) सुरत स्थिर ,हंस रूप
- (iv) निरत स्थिर
- (v) चित्त लय

हो जाता है।

**कबिरा मन निर्मल हुआ , जैसे गंगा नीर।
पीछे पीछे हरि फिरे , कहत कबीर कबीर।।**

- **एकात्म होना क्या है:-**

हमारे "आत्मघट" में जो "सारशब्द" हो रहा है ,उससे जो धार सुरत रूप में निकल कर "तनघट" में पड़ रही है उसे पलट कर "आत्मघट" के तरफ या "सारशब्द" के सम्मुख कर देना है।

यह "सुरत" जैसे ही "सारशब्द" के सम्मुख होगी , "सारशब्द" चुंबक की तरह उस धार को अपनी ओर खींच लेगा और सुरत "सारशब्द" में समाकर एक हो जाएगी । वहां पर दो नहीं रह सकते हैं ।

इसे ही "एकात्म" होना कहते हैं

**सुरत उलटि शब्दै लखौ , आत्म घट में जाय ।
"पीवअवस्था" यही है , तुरत एक है जाय ॥**

- **अध्यात्म का मूल मंत्र:-**
 मूल मंत्र "एकात्म्" है , सारशब्द, निजनाम ।
 आदि अक्षर भी यही है ,आदिनाम , धुरधाम ॥
 "पीवअवस्था " यही है , यही विदेही जान ।
 "चौथा पद" भी यही है , मूल इसी को मान ॥
- **भवसागर पार होना:-**
 मूल मंत्र " सतनाम " है , बाकी सभी असार।
 "सारशब्द"निज नाम है , इसी से भव हो पार ॥
 आदि अक्षर जिभ्या ते न्यारा,ताहि सुमिर तुम उतरो पारा ।
- **सत्यलोक क्या है , कैसा है:-**
 लोक,अलोक,शब्द है भाई,जिन जाना तिन ससंय जाई
- **सतगुरु क्या है:-**
 शब्द रूप है गुरु हमारा,तन से न्यारा ,मन से न्यारा ॥
- **नाम क्या है:-**
 आदि नाम सतनाम है , सार शब्द को जान ।
 मूल यही है , सार है , इसको लो पहिचान ॥
- **निज स्वरूप क्या है:-**
 सार शब्द निज रूप हमारा,जानि लेउ सोई जाननि हारा ॥
- **सार शब्द गुरु, और शिष्य "सुरत" में संवाद:-**
 मैं तो देखूं तुझ को , तू दीखै कहीं और ।
 लानत ऐसी सुरत को , पकड़े तन,मन,ठौर ॥
- **एकात्म कैसे हो:-**
 (I) न कहीं आना , न कहीं जाना , आपै में आप समाना ।
 (II) शब्द है गुरु, सुरत है चेला,मिले परस्पर भया अकेला ।
 (III) " पीवअवस्था" यही है , यही तो है एकात्म ,
 सुरत शब्द से मिल गई ,पूर्ण हुआ सब काम ॥

- **सार शब्द प्रकट कैसे होः-**
 पूर्ण प्रयास रहित होकर , पूर्ण सहज हो जावो ।
 मन हो शून्य ,सुरत हो स्थिर,"सारशब्द" को पावो ॥
- **मन और सुरत स्थिर क्यों होः-**
 (I) मन का स्रोत शून्य है, मन शून्य से बना है इसलिए
 इसका मूल शून्य है।
 (II) सुरत का स्रोत अचलपद , स्थिरपद, सारशब्द है ,
 इसलिए इसको स्थिर होना है ।
- **सारशब्द को कैसे पहचानेः-**
 पूर्ण अखंड, अपार,एक रस, आत्म घट में होई।
 सारशब्द ,अनहंद से न्यारा, परखै बिरला कोई॥
- **सारशब्द और माया शब्द में अंतरः-**
 "जो बदले सो माया संतो॥"
- **सार शब्द प्रकट होने के बाद क्या होता हैः-**
 (I) सत्य छिपता नहीं है केवल असत्य ही छिपता है।
 (II) सत्य प्रकट होने पर असत्य स्वयं ही समाप्त हो जाता है ।
जैसे:- सूर्य के प्रकट होने पर अंधकार स्वयं ही समाप्त हो जाता है।
- **श्री सारशब्द महिमा:-**
 (I) आधार सभी का यही है ,अलख,अमर,अविनाशी।
 सभी इसी से चल रहे , चौथे पद का वासी॥
 (II) सार यही है, मूल है, अचल ,अकर्ता, एक।
 सत्य यही है, पूर्ण है , सबका मालिक एक ॥
 (III) सत्यनाम सत्पुरुष है,यही है पद निर्वाण।
 केवल इसी को जान लो , यही है आत्मज्ञान॥

" सार शब्द "

"सार शब्द" तो अचल है संतो, उसको तुम पहचानो ।
चाल विहंगम सुरत से पहुंचो, उसी में आन समाओ।
यही "राम पद" यही "आत्म पद", गुरु पद इसी को जानो।
"राधास्वामी" इसी को कहते, पहले इसी को जानो ।
"तनघट" छोड़ो, "मनघट" छोड़ो, "आत्मघट" पहचानो।
"अविनाशी" है, "अमर", "अखंडित" परमतत्व है जानो।
"नाम विदेही" इसी को कहते हैं, केवल इसी को जानो ।
परमतत्व का परम मुक्त पद, "निर्भय पद" है जानो।
सबका मालिक एक यही है, सम्मुख है पहचानो ।
मन माया और तत्व रहित है, "अलख" इसी को जानो ।
आशा, तृष्णा, देह रहित है, "आत्म" इसी को जानो ।
रूप, रंग आकार से न्यारा, गुणातीत है जानो ।
ज्ञान, ध्यान, आधार, अगोचर इससे न्यारा जानो।
गुरु रहित पद, क्रिया रहित पद, द्वैत, अद्वैत न जानो।
"प्राणातीत", "सहज", "सम्मुखता", है अनन्य तुम जानो ।
जाप, अजाप, अनहद को छोड़ो, तीन लोक बिसराओ।
सभी ब्रह्मांड, सभी प्रकृतियाँ, पिंड, अंड से न्यारो।
भाव, विचार और "सुरत", "निरत" को सहजे हैं ठहराओ।
मन को मार "चित्त" को त्यागो, चौथे पद में आओ।
आत्म जानि, परमात्म जानो, जीवन सफल बनाओ।

"माया"

जो बदले सो "माया" संतो , जो बदले सो माया ।
सभी ब्रह्मांड , सभी प्रकृतियाँ, लोक तीन है माया संतो।
अंड,पिंड ,ब्रह्मांड है माया , "सुरत- निरत" सब माया संतो।
जाप ,अजाप,अनहद है माया, क्रिया कर्म सब माया संतो।
भाव,विचार,शरीर है माया,मन और चित्त सब माया संतो।
रूप , रंग , आकार है माया , पांच प्राण है माया संतो।

"जीवअवस्था से पीवअवस्था में आना"

"जीव" तुम "पीव" अवस्था में जावो ।
माया के संग रहते रहते , जीवन अपन गंवायो ।
दुख और कष्ट बहुत तुम भोगे , प्रभु को क्यों बिसरायो।
माया छोड़ि प्रभु को पकड़ो , जीवन सफल बनावो।
पूर्ण मुक्त सदा से खुद हो , भ्रम वश रह्यो भुलायो।
कोई नहीं पकड़ा है तुमको , तुम ही पकड़े धायो ।
अबहुँ चेत, हेत कर गुरु से नहि तो फिर पछितायो।
माया छोड़ मुक्त है जावो, "आत्म पद" में आवो।
"तनघट" छोड़ो "मनघट" छोड़ो "आत्मघट " में जावो।
यही "परमपद" सबका मालिक पूर्ण सहज है पावो ॥

"परमात्मा की खोज"

कौन कहता प्रभु जी हैं मिलते नहीं,
रास्ता सत्य का ,खोज पाते नहीं ।
तुम क्रिया और कर्म में हो उलझे पड़े ,
जब भजन,ध्यान भी उसको पाते नहीं।
पोथियों की तो तुम आरती कर रहे,
इंद्रियातीत उसको बताते रहे।
भाव,मन ,चित्त भी उसको पाते नहीं।
योग से भी नहीं , भोग से भी नहीं।
ध्यान से भी नहीं ,ज्ञान से भी नहीं।
यज्ञ से भी नहीं , बुद्धि से भी नहीं।
देह से भी नहीं , तत्व से भी नहीं।
कथनी , करनी और रहनी में है अंतर बहुत,
मन , वचन , कर्म से ढूँढ़ते फिर रहे।
बुद्धि , जप , तप भी उसको पाते नहीं।
द्वैत , अद्वैत में भी रहे ढूँढ तुम।
न वो साकार में , न निराकार में ।
इससे आगे बढ़ो , सत्य खुद ही मिले।
सत्य का भेद जानो , समर्पण करो ।
पहले ढूँढो गुरु पूर्ण सदगुरु हो जो।
फिर होकर अनन्य , तुम सहज हो सदा।
उसके सम्मुख सदा होकर रहने लगो।
ऐसे खोजो तुरत तुमको मिल जाएगा
मन , सुरत , चित्त भी उसमें मिल जाएगा ।
पूर्ण होकर सदा , उसके सम्मुख रहो ।
सुध उसी की रहे ,तुम उसी के रहो ।

मन और देह को सम करो, सत्य का पकड़ो द्वार।

" पांच तत्व " के परे हैं, शब्द वही है सार ॥

कृपा बिना सतगुरु नहीं, बिन सतगुरु नहिं बोध।
बिना बोध नहीं आत्मा, बिन आत्म नहि मौक्ष ॥

आठवाँ कमल, आत्म घट खोजो, चक्र आठवाँ जानो।

पीव अवस्था इसी को कहते, चौथा पद है जानो ॥

यही राम है, यही नाम है, गुरु, गोविंद है जानो ।

न यह अंदर, ना यह बाहर, गुरु से मिल पहचानो॥

व्यापक सर्व, सर्व से न्यारा, अलख, अगम है जानो।

नहि वह गुप्त, नहि वह प्रकट, पूर्ण अकर्ता जानो ॥

है सन्मुख पर दीखत नाही, भेद गुरु से जानो ।

"सारशब्द" वह पूर्ण मुक्ति पद, सन्मुख है पहिचानो॥

बैराग्य क्या है :-

अंतः जगत और बाह्य जगत, दोनो से द्रष्टि को मोड़।

केवल आत्म बोध से, खुद से खुद को जोड़ ॥